International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

मध्य हिमालय क्षेत्र में विरखम परम्परा : अल्मोड़ा जनपद के सन्दर्भ में

डॉ गोकुल सिंह देउपा

सहायक प्राध्यापक, इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर, अल्मोड़ा

सारांश

सामान्यतया पत्थर की एकाश्मक संरचना को विरखम कहा जाता है। वीरखम या पाषाण स्तम्भ के निर्माण का इतिहास मानव सभ्यता के विकास से घनिष्ठ रूप से जुड़ा है। कुछ प्राचीन समाजों में अपने पूर्वजों की स्मृति में इस प्रकार के पाषाण स्तम्भ खड़े किये जाते थे। भारत में केरल, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, उड़ीसा, मध्य प्रदेश में मिले महापाषाण संस्कृति के अवशेषों में डोल्मेन तथा पाषाण स्तम्भ मिलते हैं। वैदिक साहित्य में सीमित मात्रा में, जैन एवं बौद्ध साहित्य में मृतकों की याद में काष्ठ या पाषाण स्तम्भ खड़े करने का वर्णन मिलता है। बौद्ध धर्म में स्तूपों का निर्माण इसका विस्तार था। लिखित साहित्य में संस्कृत साहित्य में इसे 'यष्टी' तथा प्राकृत भाषा में 'लष्टी' कहा जाता है। संगमकालीन साहित्य एवं पुरातात्विक साम्राग्री में इस प्रकार के प्रमाण मिलते हैं। विजय नगर राज्य नाडुकल्ल आन्ध्र प्रदेश नागार्जुनकोंडा में 200 ई0पूर्व से 300 ई0 के मध्य के अनेक पाषाण स्तम्भ प्राप्त हुए हैं। वर्तमान समय में भी अनेक जनजातियॉ अंतिम संस्कार के समय इस प्रकार के पाषाण स्तम्भ का निर्माण करती है। विरखम या पाषाण स्तम्भ पत्थर की (एकाश्म/Monolithic)) संरचना होती है, जिसे भूमि में लम्बवत् गाढ़ा जाता है। डॉ0 राम सिंह ने अपनी पुस्तक राग भाग काली कुमाऊँ में लिखा है कि पुराने समाजों में अपने योद्धाओं या वीर पुरूषों की स्मृतियों को चिरस्थायी रखने के लिये निर्मिम प्रस्तर संरचना विरखम कहलाती है (सिंह राम, 2002 : 1) ऐतिहासिक रूप से विरखम को महापाषाण काल से जोड़ा जाता है (जोशी, 1990, 13)। सामान्यतया माना जाता है कि अपने समाज की रक्षा करने या वीरगति को प्राप्त करने वाले लोगों की स्मृति में विरखम को स्थातिपत किया जाता है (Setter and Kalburgi, 1983 : 17)। किन्तु इस क्षेत्र में हुई नयी शोध से इनके प्राप्ति स्थल प्राचीन मार्ग, मन्दिर परिसर, शवदाह स्थल, सीमा नौले, धर्मशाला स्थल हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि इनको किसी एक उद्देश्य से स्थापित नहीं किया गया है। नये अध्ययन से अनुमान लगाया जाता है कि विरखम मात्र स्मृति तक सीमित नहीं हैं बल्कि इन से उस समय के सामाजिक–राजनैतिक जीवन के विषय की जानकारी मिलती है (Setter and Sontheimer, 1982)।

शब्द कुंजी– विरखम, पाषाण स्तम्भ, स्थापत्य, वास्तुकला, ऐतिहासिकता, पुरातत्व, मूर्तिकला।

परिचयः

वीरखम शब्द की उत्पत्ति कुमाऊँनी भाषा के वीर तथा खम शब्द से हुई है। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है– वीर स्तम्भ। जिसे अंग्रेजी में Menhir कहा जाता है। Menhir दो शब्दों से मिलकर बना है–*maen* or *men*जिसका अर्थ stoneया पत्थर होता है, *hir*का अर्थ longया लम्बा होता है। इस प्रकार **Menhir** का शाब्दिक अर्थ लम्बे पत्थर से होता है। जिसे लम्बवत जमीन में गाढ़ा जाता है। पुरातत्त्व विषय में इस शब्द को 18वीं शताब्दी में प्रचलित करने का श्रेय फ्रेंच सैन्य अधिकारी (Théophile Corret de la Tour d'Auvergne.*Landru, Philippe ,23 August 2008)* को जाता है। पाषाण काल में मनुष्य के द्वारा पाषाण उपकरणों का प्रयोग अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये किया जाता था। जिसमें शिकार, शवाधान, समाधियॉ, हथियार, अनाज को

पीसने एवं चित्रण हेतु पाषाण को प्रयोग किया जाता था। इसी क्रम में उसने अनेक पाषाण संरचना का निर्माण भी किया जिसमें सिस्ट, मेनहिर, डोलमेन, छत्रशिला, रॉक कट केव्स, पाषाण भित्तियों पर मिलने वाले चित्र आदि शामिल हैं।

उद्देश्य

1. विरखम परम्परा का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि व महत्व का अवलोकन करना।
2. अल्मोड़ा के विरखमों का निर्माण एवं स्थापत्य कला संरक्षण संस्कृतिक धरोहर की उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. विरखम परम्परा का स्थापत्य एवं कलाशिल्प का अध्ययन करना।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन कार्य को पूर्ण करने हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तर लेखों, शिलालेखों, अभिलेखों का विश्लेषणात्मक एवं
संश्लेषणात्मक विधि एवं ऐतिहासिक तथ्यों व साक्षात्कार एवं क्षेत्रीय सर्वे किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन **"मध्य हिमालय क्षेत्र में विरखम परम्परा : अल्मोड़ा जनपद के सन्दर्भ में"** में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक ऑकड़ो का प्रयोग प्रस्तरलेखों, शिलालेखों, अभिलेखों एवं साक्षात्कार द्वारा किया गया है। साथ ही द्वितीयक ऑकडों में क्षेत्रीय पत्र–पत्रिकाऐं, पुस्तकें, समाचार पत्रों की सहायता ली गई है। साथ ही अध्ययन क्षेत्र को चित्र, आकृति फोटोग्राफ के माध्ययम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

इतिहास

विरखम स्थापित करने वाले लोगों एवं उनकी संस्कृति के विषय में कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। इसका सम्बन्ध इतिहास के अलिखित काल से माना जाता है। अतः इन विरखमों से किसी स्पष्ट लिपि का पता नहीं मिला है जिससे इनके विषय में और अधिक ठोस जानकारी मिल सके, किन्तु उत्तराखण्ड से प्राप्त कुछ विरखमों में लेख भी मिले हैं। विरखमों से अनाज, वर्तन, आभूषण एवं पाषाण उपकरण पाये गये हैं। इनसे प्राप्त सामाग्री के रेडियो कार्बन डेटिंग विधि से ज्ञात होता है। इनका निर्माण ईसा 3000 वर्ष पूर्व से इनका निर्माण होता रहा है। इनको यूरोप के बीकर लोगों से भी जोड़ा जाता है जो यूरोप में उत्तर नवपाषाण काल एवं पूर्व कांस्यकाल 2800 से 1800 ईसा पूर्व में निवास करती थी। आधुनिक शोध से इनके 6000 से 7000 साल पुराने होने के प्रमाण मिले हैं (Aviva, Elyn; White, Gary, 1998). कई विद्वान इनकों सामान्य रूप से इनको महापाषाणिक संस्कृति (1000 से 800 ईसा0 पूर्व) से सम्बंधित माना जाता है (Allchin & Allchin, 1983: 62–96). यह परम्परा नवपाषाण काल एवं ताम्र काल में भी प्रचलित थी जो कि वर्तमान समय में भी कुछ जनजातियों में प्रचलित है (Leshnik, 1974: 21–25).

भारत में पाषाण स्तम्भों का इतिहासः

ऐतिहासिक रूप से भारत में हड़प्पा काल (2500 ईसा0 पूर्व से 1750 ईसा0 पूर्व) में इस प्रकार के साक्ष्य प्राप्त नही मिले हैं। वैदिक काल में 1500 ईसा0 पूर्व से 600 ईसा0 पूर्व में भी इस प्रकार के कोई साक्ष्य नहीं मिले हैं। महाजनपद काल 600 ईसा0 पूर्व में प्रचलित बौद्ध धर्म के ग्रन्थों से इनकी प्रथम लिखित जानकारी मिलती है। मौर्य काल 300 ईसा0 पूर्व के अनेक एकाश्मक स्तम्भ मिले हैं, जो कि मुख्यतया राजनैतिक एवं धार्मिक कारणों से स्थापित किये गये थे, सामान्यतया अशोक स्तम्भ कहे जाते हैं। संगम काल में शहीद सैनिकों के सम्मान में वीरगल या स्तम्भ निर्माण किये जाने की जानकारी प्राप्त होती है। संगम काल 300 बी0 सी0 से 300 ए0 डी0 में व्यवस्थित रूप से नाडूकल्ल की स्थापना की जाती थी। इस काल से भारत में विभिन्न शासकों के समय से लेकर वर्तमान में कुछ जनजातियों में विरखम स्थापित किये जाने की परम्परा पायी जाती रही है।

उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जनपद में प्रचलित विरखम परम्पराः

कुमाऊँनी बोली का विरखम या वीर स्तम्भ ऐसे योद्धाओं की सेवा, साहस एवं योगदान की प्रसंशा की स्मृति में स्थापित किया जाता था। एक मत के अनुसार उत्तराखण्ड में शासन करने वाला ऐतिहासिक वंश कत्यूर था, जो अयोध्या से आये सूर्यवंशी शासक थे, पूर्ववर्ती राजधानी के बाद कत्यूर घाटी में आकर बसे इसलिए कत्यूरी कहलाये (पांडे, 1990: 191)। जो धर्म निष्ठ तथा बिना धर्म कार्य किये भोजन नहीं करते थे। इस काल के नौले अर्थात जलाशय, सड़कें, नगर मन्दिर, दुर्ग एवं सराय या धर्मशालायें मिलती हैं। जब मन्दिर आदि की प्रतिष्ठा में यज्ञादि करते थे तो यज्ञ स्तम्भ अर्थात वृहत्स्तम्भ जमीन पर गाड़ देते थे (पाण्डे 1990: 191)। पाण्डे, कमिश्नर बेटन के लेख को सन्दर्भित करते हुए लिखते हैं कि कुमाऊँ की तराई भावर में कत्यूरी स्मारक हैं जिनकी शिल्पकला दक्षिण में पाये गये वृहत्स्तम्भों, भवनों, बाबरियों एवं पनघटों के समान है।

इस प्रकार 6 वी शताब्दी में कत्यूरी शासकों (डबराल, वि0सं0 2051, 4) से लेकर चन्दकाल तक शासकों द्वारा समय–समय पर स्मृति एवं वीरता स्वरूप मन्दिर, नौले, धर्मशालाएँ, विरखम आदि बनवाये। इसके अतिरिक्त कटोच, नैथानी एवं रतूड़ी आदि जैसे अन्य विद्वानों ने भी समय–समय पर इससे सम्बन्धित अपने लेख प्रकाशित किये हैं । इसी तरह पैकों या वीरों की विरुदावलियों हुड़की बौल, भड़ाऊँ तथा जागर आदि में है। चम्पावत, धौलीशिंलग, छन्दारेगणू, मण, मंगोली, मड़चमार एवं धामीगाँव के वीरस्तम्भों में क्रमशः शाके 1293 (स्पूनर, 1924:52) 1318, 1324–1346, 1366, 1392, 1396, 1612 अंकित हैं (पुरातत्व समीक्षा, 1992–93 5–7)।

विरखम की संरचना

वीरखम एकाश्मक पत्थर का बना चौकोर पत्थर होता है। जिसकी लम्बाई 1.5 से 2 मी0 या इससे भी अधिक हो सकती है (हिमालयन संग्रहालय, नैनीताल)। इसका वजन तीन से पॉच कुन्तल तक हो सकता है। जो कि मुख्य रूप से विभिन्न मार्गो के पास ही भूमि में रोपे गये हैं। वीरखम को स्थापित करने से पहले इनकों भलीभॉति तराशा जाता था तथा चारों ओर से चित्रण किया जाता था। इस चित्रण से इनके स्थापित किये जाने के उद्देश्य एवं तत्कालीन सामाजिक–सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन की जानकारी मिलती है।

मध्य हिमालयी क्षेत्र में स्थापित बिरखम स्वरूप एवं आकार की दृष्टि से तीन प्रकार के हैं–

1. प्रथम इनमें स्तंभ सदृश्य बिरखम एकात्मक शिला से बने हैं तथा आधार से शीर्ष तक चतुष्फलकीय हैं।
2. दूसरे देवकुलिका के समान बिरखम लघु देवालय की तरह प्रतीत होते हैं। इनका आकार शिखर की ओर संकुचित होता गया है।
3. तीसरे विरखम शिलापट के समान दो फलक वाले हैं। इन विरखमों के शीर्ष पर आमलक, कलश एवं लिंग स्थापित किया गया है।

विरखम को आकार और आलेखन के आधार पर निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं। ''वीरखम के मुख्य रूप से छः भाग हैं।'' जो निम्नवत हैं–

1. शिवलिंग नुमा भाग।
2. आमलक नुमा भाग।
3. ग्रीवा नुमा भाग।
4. चौखट या गवाक्ष युक्त भाग।
5. पट्टी भाग।
6. शिखर शैल नुमा भाग।

शीर्ष भाग

विरखम का शीर्ष भाग, जिसका आकार लिंग की तरह होता है, लिंग नुमा भाग कहलाता है। यदि योद्धा की दृष्टि से देखें तो यह भाग एक टोपी नुमा है। अर्थात इस भाग को योद्धा की धातु–टोपी या सिरस्त्राण कह सकते हैं। मन्दिरों में स्थापित विरखम का शिखर मन्दिर के शिखर के समान होता है, जिसका उदाहरण अल्मोड़ा जिले के मुण्डेश्वर मन्दिर में स्थापित विरखम है।

आमलक या मुख

शीर्ष से नीचे वाला भाग मंदिर के आमलक की भाँति होता है। इस भाग को योद्धा का मुख मण्डल कह सकते हैं। डीडीहाट के हाट गॉव से प्राप्त विरखम में यह मुख के समान उत्कीर्ण किया गया है। जबकि डीडीहाट के नार्मल से प्राप्त विरखम भी इसी प्रकार के उत्कीर्ण किया गया है। कत्यूरी काल के बने विरखमों का आमलक सुन्दर ढंग से उत्कीर्ण किया गया है, जबकि चन्द काल के विरखम में इसे गोलकार एवं सपाट छोड़ दिया गया है।

ग्रीवा या गर्दन

आमलक से नीचा वाला भाग ग्रीवा या गर्दन की तरह होता है। अतः इस भाग को योद्धा की ग्रीवा कह सकते हैं। सभी उत्कीर्ण किये गये विरखमों में ग्रीवा को स्पष्टतया उत्कीर्ण किया गया है। कुछ विरखम को छोड़कर जिसमें विरखम गोलाकर बिना किसी अलंकरण के हैं, अथवा सपाट हैं, ऐसा प्रतीत होता है कि इन विरखमों को बाद में स्थापित किया गया है, सम्भवतः मूल विरखम के क्षरण होने पर।

चौखट या गवाक्ष युक्त भाग

ग्रीवा से नीचे चौखट या गवाक्ष युक्त भाग होता है। इस भाग को योद्धा का वक्ष स्थल कह सकते हैं, जो प्रस्तर स्तम्भ का सबसे मजबूत व चौड़ा भाग होता है। कत्यूरी काल के अधिकांश विरखमों में इसका अलंकरण किया गया है, जिसमें कोई देवी, देवता या योद्धा के चित्र उकेरे गये हैं, अथवा कोई अन्य चित्रण भी किया गया है।

पट्टी भाग

चौखट या गवाक्ष युक्त भाग से नीचे का भाग पट्टी कहलाता है। इस भाग को योद्धा के उदर और कमर से तुलना कर सकते हैं।

शिखर शैल या पैर :

अंतिम भाग को शिखर शैल कहा जाता है, इसका योद्धा के पाद से तुलना कर सकते हैं। अधिकांश विरखमों में यह भाग विरखम के सापेक्ष पतला, गोलाकार होता है, जिसका अधिकांश भाग जमीन में गाढ़ा जाता है।

चित्रणः

विशाल शिलाखंडों में बनाए गए इन विरखमों में वक्राकार, चक्रीय ढाल है। हाथ भाला लिए हुए योद्धा, बांए हाथ से अश्व की लगाम एवं दाहिने हाथ से तलवार लिए हुए अश्वारोही का चित्रण भी किया गया है। वीरखमों में बनी आकृतियों में आलिंगनबद्ध युगल, करबद्ध उपासक तथा उपासिकाएं तथा नृत्य मुद्रा में स्त्री व हाथ में धनुष लिए मानवों को उकेरा गया है। बठोरिया, हल्द्वानी से प्राप्त विरखम कला की दृष्टि से त्रिरथ शैली मंदिर के प्रतिरूप हैं। मंदिराकृति के इन विरखमों में सैनिकों के स्थान पर स्त्री–पुरुष को नृत्य करते हुए दर्शाया गया है। ये विरखम शान्ति काल की ओर संकेत करते हैं। संभवतः ये विरखम चंद कालीन हैं और इनका निर्माण राजा रुद्रचंद के सम्पूर्ण कुमाऊँ का शासक बनने और चंद राज्य विस्तार के उपरांत किया गया।

साधारणतया वीर स्तम्भों या स्मृति स्मारकों में अश्वारोही का अंकन होता है। मोहली गांव (नाकुरी, जनपद बागेश्वर) के सात विरखम समूह में घुड़सवार, तलवार–ढाल युक्त पैदल सैनिक आदि के उकेरे गये चित्रों के आधार पर कह सकते हैं कि विरखम योद्धाओं के स्मारक थे, जिन्हें उनके क्षेत्र विशेष में स्थापित किया जाता था।

विरखमों की प्राप्ति स्थलः

विरखमों की प्राप्ति विभिन्न स्थानों से हुई है, जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि विरखम विविध उद्देश्यों से स्थापित किये जाते थे। कुमाउॅ के प्रत्येक जिले में विरखम शब्दावलि से बने अनेक स्थान हैं जैसे विरखम, बाराखम इत्यादि।

बिरखम का उद्देश्यः

अल्मोड़ा में विरखमों को इनकी स्थापित करने की जगह के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इनको स्थापित किये जाने के विषय में स्थानीय लोगों के अलग–अलग मान्यतायें हैं। इन स्तम्भों को पवित्रता के साथ–साथ दैविक एवं अप्राकृतिक कष्टों से रक्षा करने वाला माना है। ि वरखमों के साथ–साथ नक्काशी युक्त नौले, मंदिर एवं धर्म शालाएँ भी स्मृति स्वरूप बनाये जाते थे (खर्कवाल जीवन, 1993 : 204)। इनमें से नौले व विरखम विशेष रूप से गाँव की सीमा के प्रतीक के रूप में स्थापित किये जाते थे। कहीं–कहीं यह स्तम्भ, मंदिर और धार्मिक स्थल से 15 या 20 किमी0 दूर पैदल मार्ग के आस–पास है। विरखमों को बनाये जाने के विषय में अनेक विचार दिये गये हैं। इन से प्राप्त सामाग्री से ज्ञात होता है कि यह अनेक उद्देश्यों से बनाये जाते थे। इनसे प्राप्त सामाग्री के आधार पर अनुमान लगाया जाता है कि बीरखम किसी एक ही विशिष्ट उद्देश्य हेतु नहीं बनाये जाते हैं बल्कि इसके कई कारण हो सकते हैं। जिसमें से प्रमुख अग्रलिखित है।

अंतिम संस्कार हेतु

कुछ विरखमों से अंतिम संस्कार के साक्ष्य मिले हैं। जिसमें अनाज, वर्तन एवं अन्य सामाग्री के साक्ष्य मिले हैं। (Chris Roberts, 2006). उत्तराखण्ड से प्राप्त विरखमों में इस प्रकार के साक्ष्य नहीं मिले हैं। उत्तराखण्ड में निवास करने वाले गिरी समुदाय द्वारा मृतकों के अंतिम संस्कार के बाद पुरूष समाधियों के उपर शिवलिंग की स्थापना की जाती है।

सैन्य उद्देश्य हेतु

इसका निर्माण समाज द्वारा अपने वीरों की याद में किया जाता था, खस सैनिक या पैके की स्मृति में स्यूरा – प्यूरा के गीत गाये जाते थे।(पांडे, 1990, 187)

धार्मिक उद्देश्यों हेतु

इनसे पाषाण कुल्हाड़ा, वर्तन जुआ, हल आदि सामान्य रूप से पाये जाते रहे हैं। क्षेत्रीय भ्रमण के समय ग्राम ओड़यूरा, गंगोलीहाट, जिला पिथौरागढ़ में स्थापित एक विरखम का अधिकांश भाग जमीन में गाढ़ा गया था, ग्रामीणों द्वारा बताया गया कि पुराने समय में पशुबलि हेतु इसका प्रयोग किया जाता था।

मेला स्थलों में

अल्मोड़ा जिले के द्वाराहाट एवं चम्पावत जिले के देवीधुरा में स्थित विरखम की स्थापना मेला स्थलों में की गयी है। जैसे द्वाराहाट में बिखौती मेला एवं देवीधुरा में बग्वाल मेला लगता है। द्वाराहाट में ओड़ा या विरखम भेटने की परम्परा है (फील्ड सर्वे)।

पितराड़

पितराड़ की स्थापना मृतक की याद में बारहवें दिन दो फीट उॅचे पाषाण स्तम्भ के रूप में खड़ा किया जाता था।

कठपतिया

कठपतिया पर्वतों की चोटियों में दोबट्टियों या दोराहों में निर्मित किया जाता था। इस कठपतिया में लोग पत्थर रखते थे। कुमाऊॅ में एक कहावत भी है कि ''कठपतियॉ में ढुंड़ रख्यै कर दे।'' अर्थात मात्र औपचारिकतावश किया गया काम, जिसमे किसी प्रकार की कोई भावनाएं न जुड़ी हों।

शमशान घाट के समीप

अल्मोड़ा से विश्वनाथ से इस प्रकार के विरखम मिले हैं (फील्ड सर्वे)।

विरखम जिस क्षेत्र में भी स्थापित किये गये हों इनको लोग बड़ी धार्मिक भावना से देखते हैं तथा इनकी देवरूप में पूजा की जाती है। इस प्रकार यह हमारी संस्कृति की अभिन्न अंग रहे हैं। जिसको संरक्षित किये जाने की अति आवश्यकता है।

अल्मोड़ा

सुयाल एवं सुपै नदियों के संगम पर स्थापित, यहॉ पर मुख्य मन्दिर को मिलाकर कुल 6 मन्दिर है, यहॉ से प्राप्त चार विरखमों में सभी को जमीन से पृथक रखा गया है, प्रत्येक मन्दिर हेतु एक विरखम की स्थापना की गयी थी तो निश्चित की विरखमों की संख्या भी छः होनी चाहिए। मंदिरों की संरचना देखकर लगता है कि इनकों सम्भवतः एक की समय में स्थापित किया गया है, विरखम की संरना देखकर लगता है कि इन को अलग–अलग समय में स्थापित किया गया है। दो विररखमों के शिखर एवं मन्दिरों के शिखर में साम्यता है, किन्तु दो विरखमों के शिखर सपाट हैं। एक मात्र विरखम पूर्ण है उसकी उॅचाई 5 फिट है, शेष सभी विरखम विखंडित अवस्था में मंदिर में रखे गये हैं। विश्वनाथ से भी प्राप्त हुआ है।

परिणाम

1. अल्मोडा में स्थित विरखम एवं इन्हें जहॉ पर स्थापित किया वह स्थान ऐतिहासिक एवं अत्यन्त प्राचीन एवं पवित्र है। इनके अध्ययन से क्षेत्रीय समाज, संस्कृति, एवं सभ्यता सहित स्थापत्य कला एवं ऐतिहासिक तथ्यों का पता चलता है।
2. अल्मोड़ा के विरखमों से प्राप्त लेख, तिथि, स्थापत्य से विभिन्न राजवंशों कार्यकाल की जानकारी प्राप्त होती है। जिससे अल्मोड़ा के इतिहास को लिखने में काफी मदद मिलती है।

निष्कर्ष

अभी तक प्राप्त विरखमों के आधार पर हम तत्कालीन समाज, संस्कृति एवं इतिहास को समझ सकते हैं। अभी तक के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इनका निर्माण किसी एक उद्देश्य हेतु नहीं किया गया है, इनमें उकेरे गये चित्र एवं इनके प्राप्ति स्थलों से इनके निर्माण के उद्देश्यों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। किसी भी स्थल में विरखम स्थापित किये जाने से ही उस स्थल को विशेष महता मिलती थी। अतः तत्कालीन इतिहास, समाज, संस्कृति को समझने में विरखम महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

(अल्मोड़ा के विभिन्न स्थानों से प्राप्त विरखम)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. A.R. Indian Archaeology A Review. Delhi. Annual Publication of Archaeological Survey of India.
2. Agrawal, D. P., Joshi M.P., 1978, Man and environment, Part-2, Ahmadabad.
3. Agrawal, D.P., D.Bhatt and J.S.Kharakwal. 1992. Savagar Tatha Mridbhand (in Hindi), PAHAR 5-6 12-15.
4. ALLCHIN, B. & F.R. ALLCHIN. 1983. *The rise of civilization in India and Pakistan*. New Delhi: Select Book Service Syndicate.
5. Atkinson, E.T., 1882, Himalayan Gazetteers, Part-II,

6. Bhatt, M.C. 1974. Parvatiya Itihas ke Kuch.Sadhan (in Hindi). Parvatiya Itihas Parishad ki Sodh Patrika 3:6-17
7. Bhatt, M.C. 1981. Uttarakhand ka Purattava (in Hindi). in Uttara Pradesh ki Pura Sampada (T.P.Singh and K.K.Roy Eds.), pp 71-74. Lucknow Director, Information and Communication Department, U.P.
8. Carnac, H.R. 1877. Rough Notes on Some Ancient Sulpturing on Rocks in Kumaon Similar to Those Found in Europe. Joumal of Asiatic Society of Bengal 46:1-15
9. CHATTOPADHYAY, K.P. 1943. Korku funeral and memorial posts. *Journal of Royal Asiatic Society of Bengal* 9: 201–209.
10. Dabral, S. P., 2022, Uttarakhand ka Itihas (Sakshya Sanklan), part- 1,
11. Hainwood, W.J., 1856, Edinburg new phy. J., new series- 4,
12. Hemraj. 1989-90. Puratattua Sameeksha. Almora: UP State Archeology Unit Annual Report.
13. Joshi, M.P. 1987. Dots, Cup-Marks and PITS vis-a-vis Megaliths New Evidences from Kumaon. Puratattua 16:25-29
14. Joshi, M.P. 1992 Uttaranchal Kumaon Garhwal Himalaya Almora: Shree Almora Book Depot
15. Kharakwal, J.S. 1992. Mahashmiya Sanskriti ki Khoj mai (in Hindi), PAHAR 5-6: 16-17.
16. Leshnik, L.S. 1970. Early Burials from Nagpur District, Central India, Man 5(3): 498-511.
17. LESHNIK, L.S. 1974. *South Indian Megalithic burials: the Pandukela complex*. Wiesbaden: Franz Steiner.
18. Lucknow: U.P. State Archaeology Department Tewari. R. 1984. Puratattua Sameeksha Lucknow UP State Archaeology Department
19. Mathpal. Y. 1992. Uttarakhand ki Aadyaitihasik Sanskriti Tatha Kala, PAHAR 5-6: 181-190.
20. Matiyani, S. 1981. Birkhamba, in Katha Vividha (in Hindi) (H.B. Gahatori and S.S.Bisht Eds.). pp 119-130. Nainital: Kansal Book Depot.
21. Nautiyal, K.P., 1987, Painted Greyware Culture in Garhwal Himalaya, Puratattav,
22. ROY, S.C. 1912. The Munda and their country.Ranchi.*Man in India*14: 391.